[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No...............

Sr. No. of Question Paper : 3499 **A**

Unique Paper Code : 12051403

Name of the Paper : हिंदी उपन्यास

Name of the Course : **B.A. (H) – Hindi**

Semester : IV

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए :

(क) "हमारे शिक्षालयों में नरमी को घुसने ही नहीं दिया जाता। वहां स्थाई रूप से मार्शल-लॉ का व्यवहार होता है। कचहरी में पैसे का राज है, हमारे स्कूलों में भी पैसे का राज है, उससे कहीं कठोर, कहीं निर्दय देर में आइए तो जुर्माना; ना आइए तो जुर्माना; सबक ना याद हो तो जुर्माना; किताबें न खरीद सकिए

P.T.O.

तो जुर्माना; कोई अपराध हो जाए तो जुर्माना; शिक्षालय क्या है, जुर्मानालय है। यही हमारी पश्चिमी शिक्षा का आदर्श है, जिसकी तारीफों के पुल बाँधे जाते हैं। यदि ऐसे शिक्षालयों से पैसे पर जान देनेवाले, पैसे के लिए गरीबों का गला काटने वाले, पैसे के लिए अपनी आत्मा को बेच देनेवाले छात्र निकलते हैं, तो आश्चर्य क्या है ?"

अथवा

नौ बजे कथा आरंभ हुई। यह देवी-देवताओं और अवतारों की कथा न थी। ब्रह्म-ऋषियों के तप और तेज का वृतांत न था, क्षत्रियों के शौर्य और दान की गाथा न थी। यह उस पुरुष का पावन चरित्र था जिसके यहां मन और कर्म की शुद्धता ही धर्म का मूल तत्व है। वही ऊंचा है, जिसका मन शुद्ध है; वही नीचा है, जिसका मन अशुद्ध है- जिसने वर्ण का स्वांग रचकर समाज के एक अंग को मदान्ध और दूसरे को म्लेच्छ नहीं बनाया ? किसी के लिए उन्नति या उद्धार का द्वार नहीं बंद किया- एक के माथे पर बड़प्पन का तिलक और दूसरे के माथे पर नीचता का कलंक नहीं लगाया। इस चरित्र में आत्मोनन्नति का एक सजीव संदेश था, जिसे सुनकर दर्शकों को ऐसा प्रतीत होता था, मानो उनकी आत्मा के बंधन खुल गए हैं, संसार पवित्र और सुंदर हो गया है।

(ख) संसार में पाप कुछ भी नहीं है, वह केवल मनुष्य के दृष्टिकोण की विषमता का दूसरा नाम है! प्रत्येक व्यक्ति एक विशेष प्रकार की मनःप्रवृत्ति लेकर उत्पन्न होता है-प्रत्येक व्यक्ति इस संसार के रंगमंच पर एक अभिनय करने आता है। अपनी मनःप्रवृत्ति से प्रेरित होकर अपने पाठ को वह दोहराता है-यही मनुष्य का जीवन है। जो कुछ मनुष्य करता है, वह उसके स्वभाव के अनुकूल होता है और स्वभाव प्राकृतिक है। मनुष्य अपना स्वामी नहीं है, वह परिस्थितियों का दास है- विवश है। कर्ता नहीं है, वह केवल साधन है। फिर पुण्य और पाप कैसा ?

अथवा

साथ रहने की यंत्रणा भी बड़ी विकट थी और अलगाव का त्रास भी। अलग रहकर भी वह ठंडा युद्ध कुछ समय तक जारी ही नहीं रहा, बल्कि अनजाने ही अपनी जीत की संभावनाओं को एक नया संबल मिल गया था कि अलग रहकर ही शायद सही तरीके से महसूस होगा कि सामनेवाले को खोकर क्या कुछ अमूल्य खो दिया है। और वकील चाचा की हर खबर, हर बात इन संभावनाओं को बनाती-बिगड़ती रही थी।

सामने वाले को पराजित करने के लिए जैसा सायास और सन्नद्ध जीवन उसे जीना पड़ा उसने उसे खुद ही पराजित कर दिया। सामनेवाला व्यक्ति तो पता नहीं कब परिदृश्य से हट भी गया और वह आज तक उसी मुद्रा में, उसी स्थिति में खड़ी है- सांस रोके, दम साधे, घुटी-घुटी और कृत्रिम!

2. निम्नलिखित में से किन्हीं दो उपन्यासकारों पर टिप्पणी लिखिए :

(क) यशपाल

(ख) श्रीलाल शुक्ल

(ग) मन्नू भंडारी

(घ) मैत्रेयी पुष्पा

(7.5×2=5)

3. 'कर्मभूमि' उपन्यास गांधीवादी विचारधारा से प्रभावित कथाओं का तामा-बाना है । इस कथन के आलोक में अपने विचार व्यक्त कीजिए ।

(15)

अथवा

'कल की सुखदा और आज की सुखदा में कितना अंतर हो गया है । भोग-विलास पर प्राण देने वाली रमणी आज सेवा और दया की मूर्ति बनी हुई है ।' इस कथन के आधार पर सुखदा का चरित्रांकन उदाहरण सहित कीजिए ।

4. 'चित्रलेखा' उपन्यास के कथ्य-शिल्प पर विचार कीजिए । (15)

अथवा

'चित्रलेखा' उपन्यास के उद्देश्य को स्पष्ट कीजिए ।

5. 'आपका बंटी' उपन्यास नारी मन की अनेक परतों को खोलता है । स्पष्ट कीजिए । (15)

अथवा

'आपका बंटी' उपन्यास की भाषा-शैली पर विचार कीजिए ।